हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक एवं शब्द भारती (हिंदी संसाधन केंद्र), गुवाहाटी, असम के संयुक्त तत्वावधान में "हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएं : संपर्क भाषा से तकनीकी-प्रद्योगिकी विकास तक की संवाहिका" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक: 21 एवं 22 मार्च 2025) पर प्रतिवेदन हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक एवं शब्द भारती (हिंदी संसाधन केंद्र), गुवाहाटी, असम के संयुक्त तत्वावधान में "हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएं: संपर्क भाषा से तकनीकी-प्रद्योगिकी विकास तक की संवाहिका" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक: 21 एवं 22 मार्च 2025) का उद्घाटन सिक्किम विश्वविद्यालय के कावेरी हॉल में हुआ। जिसमें सिक्किम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति ज्योति प्रकाश तामंग के निर्देशानुसार हिंदी विभाग एवं अंग्रेजी विभाग द्वारा विश्व कविता दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का मिश्रित रूप में उद्घाटन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रदीप के शर्मा भाषा तथा साहित्य संकाय की अधिष्ठाता एवं अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रोज़ी चामलिंग तथा एवं शब्द भारती संस्थान के विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के माध्यम से हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में दोनों विभागों के विभागाध्यक्षों द्वारा अपने - अपने स्वागत वक्तव्य के रूप में विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया तथा उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सिक्किम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति ज्योति प्रकाश तामंग द्वारा दोनों विभागों के अतिथियों को सम्मानित किया गया। माननीय कुलपति महोदय ने अपने वक्तव्य में भाषा एवं साहित्य के विकास के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर संकेत किया तत्पश्चात विश्वविद्यालय में चल रहे अनुवाद परियोजनाओं तथा यूजीसी के समक्ष विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित आगामी परियोजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए विशिष्ट अतिथियों के समझ विश्वविद्यालय का अकादमिक खाका प्रस्तुत किया। माननीय कुलपति महोदय ने वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत मातृभाषा में शिक्षा के महत्व तथा उसमें विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के अवसर को शिक्षा जगत में सराहनीय कदम बताया। इस कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी विभाग की डॉ. परविंदर कौर जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के डॉ. गोरखनाथ तिवारी ने किया। इसके पश्चात कार्यक्रम का प्रथम तकनीकी सत्र बराद सदन में शुरू हुआ।

संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र की शुरुआत हिंदी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना के गायन से हुई। तत्पश्चात विभाग के शोधार्थियों द्वारा शोधपत्र की प्रस्तुति की गई। जिनमें बिद्या छेत्री ने नेपाली एवं हिंदी भाषा के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए दोनों भाषाओं के अनुवाद प्रक्रिया और उसकी चुनौतियों पर चर्चा की। इसके पश्चात शोधार्थी संतोष साह ने अपने शोधपत्र प्रस्तुति अनुवाद के विभिन्न सोपानों पर चर्चा करते हुए उसके भाषिक और मशीनी पक्ष पर बात की। इसके बाद मुख्य वक्ता श्री कालीचरण बासफोर ने अनुवाद पर अपनी बात रखते हुए तकनीकी शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया, भाषा और अनुवाद के अंतर्संबंध तथा उसके मानकीकरण पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात विशिष्ट वक्ता तृप्तिरानी आचार्जी महोदया ने सूचना प्रौद्योगिकी, पत्रकारिता और अनुवाद के अंतर्सम्बन्ध पर अपनी बात रखते हुए ऑनलाइन पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता, नागरिक पत्रकारिता, प्रसारण और फ्रीलांस पत्रकारिता के विविध क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाओं और अनुवाद के महत्व पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को एक अच्छा पत्रकार बनने के अच्छा अनुवादक होने के महत्व को समझाया। इसके बाद विशिष्ट वक्ता विनीता ब्रह्म महोदया ने ' राजभाषा हिंदी की कमियां और कार्यान्वयन की आवश्यकताएं ' विषय पर बात करते हुए राजभाषा के सामान्य अर्थ और उसके व्यावहारिक स्वरूप पर चर्चा की। जिसमें उन्होंने राजभाषा के कार्यान्वयन को लेकर अतीत की प्रशासनिक दुर्बलताओं और उदारता की चर्चा करते हुए आज भी भारत में एक राष्ट्रभाषा का निर्धारण न होने तथा क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण पर अपनी चिंता व्यक्त की। इस सत्र की सफल अध्यक्षता डॉ. चंद्रलेखा शर्मा और संचालन डॉ. दिनेश साहू ने की।

द्वितीय तकनीकी सत्र में शोधपत्र प्रस्तुति में विद्यार्थियों में बी आकाश राव ने पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं तथा भाषा परिवार के साथ उसके अंतर्संबंधों पर बात की। चांदनी रजक ने पूर्वोत्तर में हिंदी के सांस्कृतिक विविधता, परंपरा, पठन पाठन और अनुवाद की चर्चा करते हुए पूर्वोत्तर भारत के सामाजिक विकास में हिंदी और स्थानीय भाषाओं के योगदान पर बात की। इसके पश्चर सिमरन सिंह ने सिक्किम की स्थानीय भाषाओं में तकनीकी साहित्य के योगदान पर चर्चा की। द्वितीय तकनीकी सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. करबी देवी ने ब्रजवली भाषा पर अपने विचार रखते हुए श्रीमंत शंकरदेव के आदर्शों की चर्चा की और ब्रजावली भाषा में शोध की संभावनाओं की ओर संकेत किया। इस सत्र की अध्यक्षता श्री कालीचरण बासफोर तथा संचालन डॉ. प्रदीप त्रिपाठी ने किया।

भोजनावकाश के पश्चात, तृतीय तकनीकी सत्र, 21 मार्च

तृतीय तकनीकी सत्र शोधपत्र प्रस्तुतियों में विश्वजीत त्रिगुण ने अनुवाद के पारंपरिक और वर्तमान स्वरूप पर चर्चा करते हुए द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अनुवाद के व्यापक प्रसार और आज के दौर में AI जैसी तकनीक पर बात की। इसके बाद मनसा नेउग ने तकनीकी शब्दों की स्वीकारता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारे लिए शब्द न तो जटिल होते हैं, न सरल होते हैं। वे सिर्फ परिचित या अपरिचित होते हैं। इस कड़ी में आगे भानुभक्त बस्नेत ने सिक्किम के राजकीय भाषाओं पर चर्चा करते हुए सिक्किम की संस्कृति और शेष भारत के साथ उसके संबंध में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस सत्र की मुख्य वक्ता प्रोफेसर

चंद्रलेखा शर्मा ने "राजभाषा हिंदी के सरकारी कार्यान्वयन की जटिलताएं" विषय पर बात करते हुए हिंदी को सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय विरासत की पहचान बताया। इसके साथ ही राजभाषा के कार्यान्वयन में बहुभाषिकता, हिंदी की अपनी विविधता, तकनीकी चुनौतियां आदि पर बात करते हुए प्राथमिक स्तर पर बच्चों को विषय से अधिक भाषा सिखाने के सुझाव दिए। इस सत्र की द्वितीय मुख्य वक्ता निर्माली देवी महोदया ने "मीडिया की प्रस्तुति की अंतर्जाल में अनुवाद की भाषिक विकृतियां" विषय पर अपने विचार रखते हुए उत्तम पत्रकार के लिए अनुवाद के गुणों की आवश्यकता बताते हुए मीडिया की भाषा, TRP के लिए प्रसारण, उसके मापदंड, पत्रकार के दायित्व और उसकी शालीनता की चर्चा की। इसके पश्चात विशिष्ट वक्ता रिंचेन ओंगमू लेपचा ने Role of translation to preserving Lepcha language विषय पर बात करते हुए लेपचा भाषा की ध्वन्यात्मकता, अनुवाद, नामगयाल वंश और तिब्बती साहित्य के अनुवाद पर चर्चा की साथ ही मोबाइल ऐप से लेपचा सीखने की सहूलियत और वर्तमान समय में लेपचा भाषा में तकनीकी अनुवाद की चुनौतियों पर बात की। इस सत्र की अध्यक्षता लिम्बू विभाग के प्रभारी श्री ए. बी. सुब्बा ने की, जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों को सिक्किम में हिंदी और अन्य भाषाओं के विकास पर अपने अनुभव साझा किए तथा इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. चुकी भूटिया ने किया।

द्वितीय दिवस 22 मार्च 2025, प्रथम तकनीकी सत्र

इस सत्र की शुरुआत में विभाग के विद्यार्थियों ने अपने शोधपत्र का वाचन किया। जिनमें हिंदी विभाग की छात्रा पुष्पिका छेत्री ने भूमंडलीकरण के दौर में अनुवाद की भूमिका को बताते हुए व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद के महत्व पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इसके बाद ज्ञानबती साह ने पूर्वोत्तर के सामाजिक विकास में हिंदी की भूमिका (अरुणाचल प्रदेश के विशेष संदर्भ में) विषय पर बात करते हुए पूर्वोत्तर की संस्कृति और हिंदी के स्थिति पर बात की। तत्पश्चात महेश लामिछाने साहित्य में अनुवाद की उपयोगिता पर अपने विचार रखते हुए अनुवाद को भाषिक सेतु के रूप में उपयोगी बताया। इस कड़ी में हिंदी विभाग की शोधार्थी सुर्जलेखा ब्रह्म ने बोडो भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डाला। शोधार्थी अभिषेक आनंद ने अपने वक्तव्य में राजभाषा के रूप में हिंदी की विकास यात्रा पर चर्चा की। जिसमें राजभाषा के कार्यालयी स्तर पर क्रियान्वयन में आम जनता के हितलाभ और राष्ट्रीय अखंडता जैसे महत्वपूर्ण बिंदु शामिल थे। तत्पश्चात हिंदी विभाग के शोधार्थी अमित पासवान ने ' पूर्वोत्तर की भाषाओं में अनुवाद की भूमिका और साहित्यिक विमर्श ' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने अनुवाद के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का भारत के अन्य भाग में लोकप्रियता की चर्चा की, साथ ही ' गूंगमहल ' कविता के पाठ से मनुष्य के जीवन में भाषा की आवश्यकता पर अपने विचार रखें। इस प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता हिंदी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. गोरखनाथ तिवारी तथा संचालन डॉ. सरोज लामा ने की।

प्रथम तकनीकी सत्र के उपरांत संगोष्ठी के समापन सत्र की शुरुआत करते हुए हिंदी विभाग के शोधछात्र भी आकाश राव ने इस दो दिवसीय सेमिनार में प्रस्तुतियों पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसमें संगोष्ठी में आए विभिन्न विचारों इव सुझावों की संक्षिप्त जानकारी दी गई। इसके पश्चात विशिष्ट अतिथि श्री कालीचरण बासफोर ने अपना वक्तव्य रखते हुए इस दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्देश्य और विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों पर अपने विचार रखते हुए उन्हें हिंदी भाषा को तकनीकी रूप से सीखने पर बल दिया ताकि वे भविष्य में रोजगार के क्षेत्र में अग्रणी बनें। इसके साथ ही उन्होंने इस आयोजन के लिए हिंदी विभाग के संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। इसके बाद प्रो. चंद्रलेखा शर्मा ने भी अपने दो दिवसीय सेमिनार के अनुभवों को साझा करते हुए सिक्किम विश्वविद्यालय और हिंदी विभाग को धन्यवाद दिया। इस क्रम में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप के शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन के दौरान सिक्किम विश्वविद्यालय और शब्द भारती (हिंदी संस्थान केंद्र) के सभी सदस्यों का आभार प्रकट किया। जिसमें उन्होंने रोजगार की दिशा में शब्द भारती संस्थान की उपलब्धियों को चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में तकनीकी ज्ञान में दक्षता हेतु प्रोत्साहित किया। साथ ही उन्होंने सिक्किम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एवं शब्द भारती के संस्थान प्रमुख प्रो. ए. के. नाथ के सहयोग हेतु धन्यवाद दिया। इस समापन सत्र का संचालन डॉ. गोरखनाथ तिवारी ने किया।

हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
एवं
शब्द भारती (हिंदी संसाधन केंद्र)
गुवाहाटी, असम
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएँ:
संपर्क भाषा से तकनीकी-प्रौद्योगिकी
विकास तक की संवाहिका
दिनांक: 21–22 मार्च, 2025
आयोजक
हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय
DEPARTMENT OF ENGLISH,
SIKKIM UNIVERSITY
presents
Poets' Conclave
SIKKIM CHAPTER
ON THE OCCASION OF
WORLD POETRY DAY
MARCH 21, 2025
Cauvery Hall, 5th Mile
Readings with
GURU T LADAKHI
TASHI CHOPEL
RAJENDRA BHANDAR
PRABIN KHALING

DEPARTMENT OF ENGLISH,
SIKKIM UNIVERSITY
presents
Poets' Conclave
SIKKIM CHAPTER
ON THE OCCASION OF
WORLD POETRY DAY
MARCH 21, 2025
Cauvery Hall, 5th Mile
Readings with
GURU T LADAKHI
TASHI CHOPEL
RAJENDRA BHANDA
PRABIN KHALING
& An Open Mic Sess

DEPARTMENT OF ENGLISH,
SIKKIM UNIVERSITY
presents
Poets' Conclave
SIKKIM CHAPTER
ON THE OCCASION OF
WORLD POETRY DAY
MARCH 21, 2025
Cauvery Hall, 5th Mile
Readings with
GURU T LADAKHI
TASHI CHOPEL
RAJENDRA BHANDARI
PRABIN KHALING